

निबन्ध-लेखन कला

विचारणीय बातें:-

छात्र निबन्ध-लेखन की गम्भीरता को समझें, क्योंकि अपने विचारों को व्यक्त करने का यह सशक्त माध्यम है। निबन्ध लिखने का व्यक्तित्व निबन्ध लेखन में झलकता है। एक सारगर्भित निबन्ध लिखने के लिये निम्न बिन्दुओं पर ध्यान देना आवश्यक है।

- निबन्ध लेखन के लिये प्रश्न-पत्र में विकल्प होते हैं। दिये गये विषयों में से किसी एक पर ही निबन्ध लिखना होता है इसलिये ऐसे विषय को चुने जिस विषय में आप अपने विचार भली-भाँति व्यक्त कर सकें।
- तत्पश्चात् अपने विचारों को भूमिका, विषयवस्तु एवं उपसंहार के अन्तर्गत बाँटें।
- भूमिका आकर्षक तथा रोचक होनी चाहिए। अगर विषय से सम्बन्धित कोई काव्य-पंक्ति सूक्ति या घटना याद हो तो निबन्ध उसी से शुरू करें। तत्पश्चात् विषय का अर्थ स्पष्ट करें।
- विषय वस्तु के अन्तर्गत विषय का विस्तार होता है।
- वह अनुच्छेदों में हो तथा एक अनुच्छेद में एक ही विचार हो।
- अनुच्छेदों में क्रम संख्या न लिखें और न ही उपशीर्षक अगर विषय के विस्तार में किसी समस्या के कारणों का उल्लेख हो तो समाधान भी दें।
- विषय के अनुरूप प्रभावशाली भाषा का प्रयोग करें।
- अनुच्छेद इस प्रकार लिखें कि विचारों की क्रम बुद्धता बनी रहे।
- उपसंहार के अन्तर्गत अपना निष्कर्ष प्रस्तुत करें। अन्त में विषय को समस्या और समाधान के साथ समाप्त करते हुए प्रभावशाली तरीके से पढ़ने वाले पर अपनी छाप छोड़ने में कामयाब रहें यही एक अच्छे निबन्ध की कसौटी है।

परिश्रम का महत्त्व

परिश्रम का जीवन में बहुत महत्त्व है। मनुष्य ने जीवन में जो कुछ भी प्राप्त किया है वह परिश्रम से, भाग्य से नहीं। परिश्रम ही सफलता का आधार है। परिश्रम ही सफलता की कुंजी है। परिश्रम का महत्त्व बताते हुए रामधारी सिंह दिनकर ने कितनी भावपूर्ण पंक्तियाँ लिखी हैं —

ब्रह्म ने कुछ लिखा भाग्य में मनुष्य नहीं लाया है
अपना सुख उसने अपने भुजबल से ही पाया है,

प्रकृति नहीं डरकर झुकती है, कभी भाग्य के बल से,
सदा हारती वह मनुष्य के उदयम से श्रम जल से।

जीवन में सफलता अनायास ही नहीं मिलती। यदि अनायास सफलता मिल भी गई तो वह सफलता नहीं लॉटरी हो सकती है। जीवन में सफलता पुरुषार्थ से प्राप्त होती है। भर्तृहरि ने भी कहा है — उद्योगिनं पुरुषसिंहमुपैति लक्ष्मीः,

देवेन देयमिति का पुरुषाः वदन्ति।

परिश्रमी आदमी का ही लक्ष्मी प्राप्त होती है, ईश्वर देगा ऐसा आलसी व्यक्ति कहा करते हैं। कुछ आलसी लोग अपने पक्ष में कवि मल्लूकदास की कविता का उदाहरण देते हैं —

अजगर करै न चाकरी, पक्षी करै न काम,
दास मल्लूका कह गए, सबके दाताराम।

जीवन में परिश्रम करना आवश्यक है। परिश्रमी व्यक्ति जीवन की कठिन से कठिन समस्याओं को सुलझा लेता है। वह चाहे तो पर्वतों को काटकर रास्ता बना देता है। झारखण्ड के दशरथ माँझी का नाम आप सबने सुना ही होगा। जिसने पर्वत को तोड़ कर सड़क का निर्माण किया और अपनी मनचाही इच्छा पूर्ण की। ऐसा परिश्रमी व्यक्ति ही कर्मवीर कहलाता है। वह असंभव को भी संभव बना देता है। उनके बारे में अयोध्या सिंह उपाध्याय “हरि औध” ने लिखा है कि —

पर्वतों को काटकर सड़कें बना देते हैं वे,
सैकड़ों मारुभूमि में नदियाँ बहा देते हैं वे।
गर्भ में जलराशि के बेड़ा चला देते हैं वे,
जंगलों में भी महामंगल रचा देते हैं वे।

परिश्रमी मनुष्य को आत्मिक शांति प्राप्त होती है, उसका हृदय पवित्र होता है, उसके संकल्पों में भव्यता आती है, उसे सच्चे सुख की प्राप्ति होती है।

परिश्रमी व्यक्ति ही जीवन में लक्ष्मी का कृपापात बनता है। ऐसा व्यक्ति भाग्य के भरोसे नहीं रहता। वह इस बात को भली प्रकार जानता है —

उद्यमेन हि सिध्यन्ति कार्याणि न मनोरथैः।

न हि सुप्तस्य सिंहस्थ प्रविशन्ति मुखेमृगाः॥

हमारे सम्मुख इतिहास के ऐसे अनेक उदाहरण उपस्थित हैं जब अनेक महापुरुषों ने परिश्रम के बलबूते पर सफलता के चरमबिंदु को पा लिया। एकलव्य ने धनुर्विद्या में दक्षता कैसे प्राप्त की? नेपोलियन ने फ्रांस के सिंहासन पर अपना अधिकार

कैसे जमाया। महाराणा प्रताप ने मुगल साम्राज्य की नींव कैसे दिलाई? इन सब प्रश्नों का एक ही उत्तर है – परिश्रम।

परिश्रम और साहस का बड़ा ही घनिष्ठ संबंध है। जो व्यक्ति परिश्रमी होता है वह साहसी भी होता है। साहसी व्यक्ति सभी प्रकार की सफलता प्राप्त करता है। श्रम का एक विशिष्ट अर्थ भी है। इस अर्थ में श्रम उत्पादक भी होता है और अनुत्पादक भी।

किसान परिश्रम से खेती करता है उसका श्रम उत्पादक है। इसी प्रकार सभी उद्योग धंधों में लगे लोग श्रम करते हैं। यह सब श्रम—उत्पादक कहा जाएगा। खेलने में भी श्रम लगता है, पर इसे अनुत्पादक श्रम कहा जाएगा। पर इसका भी अपना एक अलग ही महत्त्व है।

आचार्य रामचन्द्र शुक्ल की दृष्टि में लक्ष्य जितना ऊँचा होगा तीर उतनी ही दूर जाएगी।

भाग्य के भरोसे बैठना कायरता है। अतः हमें ध्यान रखना चाहिए कि पुरुषार्थ मनुष्य को महान बना देता है। कार्य के प्रति निष्क्रियता मानव को पतन की ओर ले जाती है। तमिल भाषा में एक लोकोक्ति है –

“यदि पैर स्थिर रखोगे तो दुर्भाग्य की देवी मिलेगी
और पैर चलेंगे तो श्रीदेवी मिलेगी।” यह वक्तव्य
सटीक एवं यथार्थ है।

हमारे जीवन में अनेक विपत्तियाँ आती हैं। ये विपत्तियाँ हमें रूलाने के लिए नहीं अपितु पौरुष को चमकाने के लिए आती हैं। हताशा और निराशा कायरता के प्रतीक हैं। आत्मबल और दृढ़ संकल्प के सम्मुख तो बड़े से बड़ा पर्वत भी नत हो जाता है।

महाराजा रणजीत के पौरुष को देखते हुए कटक नदी ने रास्ता दे दिया था। छत्रपति शिवाजी के सामने अतुल्य सेना का मालिक औरंगजेब थर-थर काँपता रहा। अतः इसलिए कहा जाता है कि परिश्रम ही सफलता की कुंजी है। तुलसीदास ने स्पष्ट लिखा है –

सकल पदारथ एहि जग माही।
करम हीन नर पावत नाही।।

विभिन्न शिर्षकों के अन्तर्गत आगे दिए गए निबंधों पर छात्र स्वयं
विचार करें तथा फिर अभ्यास करें।

कर्म ही पूजा है

मानव—जीवन में कर्म का बड़ा महत्त्व है। कर्म से ही मनुष्य श्रेष्ठ और कर्म से ही निकृष्ट बनाता है। जन्म और जाति से कोई भी व्यक्ति महान् महान् नहीं होता। महानता उसके सद्कर्मों से आती है।

लोग ईश्वर अथवा देवी देवताओं की पूजा—आराधना करने के लिए मन्दिर में फल—फूल चढ़ाते हैं, जड़ मूर्तियों की आरती उतारते हैं लेकिन अच्छे कर्मों के बिना इस तरह की पूजा—आराधना निष्फल है।

विश्व कवि रवीन्द्र नाथ ठाकुर ने कर्म पर जोर देते हुए कहा है—

“ध्यान, पूजा को किनारे रख दे,

उनके साथ काम करते हुए पसीना बहने दे।”

इसी प्रकार सूर्यकान्त त्रिपाठी निराला जी अपने काव्य में ईश—स्मरण से ज्यादा मनुष्य के कर्म को महत्त्व देते हैं।

जीवन की किसी भी साधारण या विशिष्ट क्रिया का नाम कर्म है। यह क्रिया शरीर की चेष्टा अथवा हलचल से की जाती है।

मनुष्य के कर्म तीन प्रकार के होते हैं—

- (1) प्रारब्ध कर्म
- (2) संचित कर्म और
- (3) क्रियमाण कर्म।

जो कर्म मनुष्य के वर्तमान जीवन को चलाते हैं, उनको प्रारब्ध कर्म कहा जाता है। जो कर्म पहले से ही संग्रहीत होते हैं या पहले के इकट्ठे होते हैं, उनको संचित कर्म कहा जाता है। जबकि वर्तमान में किए जाने वाले कर्मों को क्रियमाण कर्म कहा जाता है। क्रियमाण कर्मों का फल आगे आने वाले समय समय में या भविष्य में मिलता है। संचित कर्म भूतकाल में किए गए होते हैं जबकि प्रारब्ध कर्म भूतकाल के कर्मों का परिणाम या संचित कर्मों का फल होते हैं। यह फल मनुष्य को वर्तमान जीवन में मिलता है।

कर्म के बिना मनुष्य को कुछ भी प्राप्त नहीं हो सकता। इस संसार के सारे सुख—साधन केवल कर्मशील मनुष्यों के ही लिए हैं। अकर्मण्य या आलसी व्यक्ति हष्ट—पुष्ट शरीर के होते हुए भी जीवन का सच्चा सुख पाने से वंचित हो जाते हैं क्योंकि वे उन सुखों की प्राप्ति के लिए किसी प्रकार की चेष्टा या प्रयास नहीं करते।

“सकल पदारथ हैं जग माही।

कर्महीन नर पावत नही।।”

अयोध्या सिंह उपाध्याय हरिऔध कहते हैं—

“कर्महीनता मरण कर्म कौशल है जीवन।

सौरभ रहित सुमन समान है कर्महीन जन।।”

जिस तरह सौरभ या सुगन्ध रहित पुष्प का कोई मूल्य नहीं होता, उसी प्रकार कर्महीन मनुष्य किसी गिनती में नहीं आता। कर्म के अभाव में वह जीता हुआ भी मूर्दे के समान होता है।

कर्म से मनुष्य के सारे मनोरथ पूरे होते हैं। कर्म मनुष्य को खुशी, आनन्द और जीवन का सन्तोष प्रदान करता है अतः कर्म न करने की अपेक्षा कर्म करना श्रेयस्कर है। श्रीमद्भगवद्गीता में भगवान् अर्जुन को कर्म करने का उपदेश देते हुए कहते हैं—

“कर्मण्ये वाधिका रस्ते मा फलेषु कदाचन।

मा कर्मफलहेतुर्भमा से संगोस्तव कर्माणि।।”

कर्म को पूजा या आराधना मानकर किया जाए तो उसका फल अवश्य मिलता है। कर्म—सिद्धान्त के अनुसार अच्छे कर्म का फल अच्छा और बुरे कर्म का फल बुरे रूप में मिलता है। सुख, शान्ति, आनन्द, सन्तोष, सम्पत्ति आदि की प्राप्ति होना ही सुकर्मों का फल है। दूसरी तरफ दुष्कर्मों या कुकर्मों का फल दुःख, दरिद्रता, अशान्ति एवं कलह—क्लेश का प्राप्त होना है।

अच्छा या बुरा कर्म मनुष्य के भविष्य का निर्माण करता है। हितोपदेश में कहा गया है।

“यथा मृत्पिण्डतः कर्ता कुरुते यद्यदिच्छति।

एवमात्मकृतं कर्म मानवं प्रतिपद्यते।।”

अथात् जैसे कुम्हार मिट्टी के पिण्डों से जो चाहता है, वह बनाता है, उसी प्रकार अपना किया हुआ कर्म ही मनुष्यों को बनाता है। कर्मों के प्रभाव से ही आज देवी देवता लोग सारे जगत् में पूजित हैं तथा असुर लोग निन्दित हैं। आसुरी अथवा निकृष्ट कर्म मनुष्य को निन्दा प्रदान करते हैं जबकि देवत्वपूर्ण कर्म उसे महिमावान् बनाते हैं

“कर्तुं फलनि सर्वत्र नाकृतं नाकृतं भुज्यते क्वचित्” (वेद व्यास)

अर्थात् सर्वत्रकर्म ही फल देता है। बिन किए कर्म का फल नहीं भोगा जा सकता।

आज का मनुष्य अपने जीवन की दिशा से भटक गया है। जो कर्म उसे नहीं करने चाहिए, वह उन कर्मों को करने में मन लगाने लगा है। जिन कर्मों से मनुष्य की आत्मा को, समाज को, राष्ट्र को और मानव जाति को किसी प्रकार की क्षति या हानि पहुँचती है—वे कर्म किसी मायने में शुभ नहीं हो सकते। ऐसे कर्मों को न करना ही अच्छा है।

कर्म वह बीज है जो मनुष्य के जीवन रूपी वृक्ष में सुख-शान्ति, आनन्द एवं सन्तोष रूपी मधुर फलों को पैदा करता है।

शास्त्रों में कर्म को 'तप' कहा गया है। कर्म ही सिद्धि एवं अमरत्व का द्वार है। कर्म सभी प्रकार के मनुष्यों से और ईश्वर से भी बड़ा है। ईश्वर भी कर्मों से बँधा हुआ है। वह भी सृष्टि पर अवतरित होकर पतितों को पावन बनाने, साधु पुरुषों का उद्धार करने तथा नर्कसमान दुनिया को स्वर्ग या बैकुण्ठ के समान सुखदाई जगत् बनाने का महान्तम कर्म करता है। यदि भगवान का कोई भी कर्म न हो तो उसके होने का औचित्य ही क्या रह जाए।

कहते हैं कि मनुष्य के कर्मों के ऊपर विधाता का भी वश नहीं चलता। अपने कर्मों का फल मनुष्य को एक न एक दिन अवश्य भोगना पड़ता है। भर्तृहरि कहते हैं—

“नमस्तेभ्यः कर्मभ्यो विधिरपि न येभ्यः प्रभवति।।”

(अर्थात् उन कर्मों को हम नमस्कार करते हैं जिन पर विधाता का कोई वश नहीं चलता।)

जो कर्म अभिमान से रहित होकर किए जाते हैं— वे ही सफल होते हैं। अभिमानपूर्वक किए गए कर्म कभी सफल नहीं होते—ऐसे वेदव्यास जी कहते हैं।

कुछ लोग अपने कार्यों में पूरा मन नहीं लगाते और कर्म को पूजा या श्रद्धा की भावना से न करके केवल टाल देने की भावना से कर देते हैं। इस तरह के कर्मों से पूर्ण सफलता प्राप्त नहीं होती।

कर्म ईश्वर की सच्ची उपासना या पूजा है क्योंकि कर्म से रहित किसी प्रकार की पूजा या उपासना करने पर ईश्वर प्रसन्न नहीं होता। कर्म एक ऐसी सच्ची और प्रभावशाली पूजा है, जो मनुष्य को जीवन में तत्काल अथवा प्रत्यक्ष फल प्राप्त कराती है। कर्म मनुष्य की सुख-समृद्धि का आधार है और उसके जीवन का मंगलमय वरदान भी है।

विद्यार्थी और राष्ट्र—प्रेम

प्रत्येक विद्यार्थी अपने राष्ट्र का एक अभिन्न हिस्सा होता है। जिस राष्ट्र में वह पैदा हुआ और पढ़-लिखकर बड़ा हुआ, जिस राष्ट्र ने उसे खाने के लिए अन्न, सोने के लिए धरती तथा जीने के लिए वायु दी—उस राष्ट्र से विद्यार्थी का प्रेम होना स्वाभाविक ही है।

विद्यार्थी—जीवन में जब देश-प्रेम के बीज पड़ जाते हैं तो जीवन—भर राष्ट्र के प्रति उसकी आस्था और विश्वास का पौधा हरियाता रहता है।

विद्यार्थी और राष्ट्र प्रेम का ऐसा सम्बन्ध है जैसे कि शरीर और आत्मा का सम्बन्ध। जिस प्रकार जीवित मनुष्य की आत्मा को उसके शरीर से अलग नहीं किया जा सकता, उसी प्रकार राष्ट्ररूपी शरीर से विद्यार्थी रूपी आत्मा को जुदा नहीं किया जा सकता।

विद्यार्थी के ऊपर अपने राष्ट्र तथा मातृभूमि के बड़े ही उपकार हैं। वह इन उपकारों से उत्कृष्ट तभी हो सकता है, जब वह अपने देश के प्रति अटूट निष्ठा बनाए रखे तथा अपनी मातृभूमि को श्रद्धा भरी नजरों से देखे।

जिस राष्ट्र को अंग्रेजों की कैद से स्वतन्त्र कराने में हमारे अनेक राष्ट्रवीरों ने अपनी जान की कुर्बानियाँ दीं—उन कुर्बानियों अथवा आहुतियों को सदैव याद रखना विद्यार्थी का कर्तव्य है।

अपने राष्ट्र की सेवा करते हुए प्राणों का बलिदान करने में ही मानव—जीवन की सार्थकता है। इस तथ्य को विद्यार्थियों को भली-भाँति समझ लेना चाहिए—

“शहीदों की चिताओं पर लगेंगे हर बरस मेले।

वतन पर मिटने वालों का यही बाकी निशा होगा।।”

उपर्युक्त दोनों पंक्तियों में राष्ट्र के ऊपर सर्वस्व न्योछावर कर देने की भावना है। यही मनुष्य—जीवन का सबसे बड़ा त्याग है।

स्वामी रामतीर्थ ने देश प्रेम से विभोर होकर कहा था— “भारतभूमि मेरा शरीर है। कन्याकुमारी मेरा पाँव है, हिमाचल मेरा सिर है। मेरे बालों में श्री गंगाजी बहती हैं। विंध्याचल मेरी कमर का कमर—बंद है। कुरुमण्डल मेरी दाहिनी जंघा और मालाबार मेरी बाईं जंघा है। अपने राष्ट्र की पूर्व और परिचम दिशाएँ मेरी भुजाएँ हैं।”

राष्ट्र—प्रेम का जितना सुन्दर चित्र स्वामी रामतीर्थ ने अंकित किया है, इससे सुन्दर चित्र भला और कौनसा हो सकता है?

विद्यार्थी काल में उदित हुआ प्रेम सच्चा राष्ट्र माना जाता है। क्योंकि उस प्रेम से विद्यार्थी के कोमल और सात्त्विक विचार जुड़ें हुए होते हैं। और जुड़ी हुई होती हैं उसकी उदार भावनाएँ। विद्यार्थी काल में मनुष्य के अन्दर छल—कपट नहीं होता, इस कारण विद्यार्थी का देश प्रेम सच्चा और निःस्वार्थ होता है।

माखनलाल चतुर्वेदी कवि देशप्रेम की भावना से ओतप्रोत होकर कहते हैं—

“मुझे तोड़ लेना वनमाली, उस पथ में देना तुम फेंक।

मातृभूमि पर शीश चढ़ाने, जिस पथ जावें वीर अनेक।।”

पुष्प के रूप में कवि के यह अन्तरमन की अभिलाषा है। राष्ट्र प्रेम से अभिभूत होकर वह भी राष्ट्रप्रेम में कुर्बान हुए शहीदों की पथ धूलि में मिल जाना चाहता है, ताकि उसका मानव-जीवन सार्थक हो सके।

रामधारी सिंह दिनकरजी ने राष्ट्र प्रेम पर न्योछावर हुए शहीदों को याद करते हुए कहा—

“जो अगणित लघुदीप हमारे। तुफानों में एक किनारे।

जल-जलकर बुझ गए एकदिन। माँगा नहीं स्नेह मुँह खोल।।”

विद्यार्थियों को देशप्रेम की शिक्षा प्रकृति के उपकरणों से लेनी चाहिए। नदियाँ जिस देश में कलकल करके बहती हैं, उस देश के वासियों को अपना निर्मल स्वच्छ नीर पिलाती है। भरे-भरे फलदार वृक्ष जिस देश में उगते हैं, उस देश के लोगों को अपने ताजे मधुर फल देकर उनकी भूख मिटाया करते हैं।

विद्यार्थी भी इस राष्ट्र (भारतवर्ष) के विशाल वृक्ष की डाल और फल-पत्ते की तरह हैं। अपने निःस्वार्थ त्याग एवं सेवाभावना से उन्हें अपने देशवासियों के हित में लगना चाहिए। राष्ट्र के लोगों की सेवा-सहायता करना सबसे बड़ा राष्ट्र प्रेम है। यदि आस-पड़ोस में कोई बीमार व्यक्ति है तो विद्यार्थी को चाहिए कि वह उसे अस्पताल ले जाकर दिखाए अथवा किसी डॉक्टर को वहाँ बुलाकर लाए तथा रोगी की दवाई गोली का प्रबन्ध करे; यदि कोई अंधा, लँगड़ा या कमजोर व्यक्ति किसी काम में मदद चाहता है तो विद्यार्थी को उसकी सहायता अवश्य करनी चाहिए। देशवासियों की दुःख तकलीकों में काम आना तथा मुसीबत पड़ने पर उनकी मदद करना ही सच्चा देश प्रेम है।

देश प्रेम की मूर्ति केवल देशप्रेम के गीत गाने से नहीं होती। आजकल नेता लोग देशभक्ति के कितने राग अलापते हैं, कितने भाषण एवं व्याख्यान देते हैं लेकिन सच्ची राष्ट्रभक्ति से वे कोसों दूर होते हैं। लाखों करोड़ों रुरोड़ों रुपये की सरकारी रकम को हजम करने वाले, गलत तरीकों से काले धन को एकत्रित करने वाले भ्रष्ट राजनेता तथा प्रशासनिक लोग यदि ‘देशप्रेम-देशप्रेम’ चिल्लाते हैं—तो यह उनके मुख से शोभा नहीं देता। विद्यार्थियों को देशप्रेम के लुभावने ‘मन्त्र’ देकर वे उन्हें अपनी कुटिल राजनीतिक योजनाओं में शामिल करना चाहते हैं तथा विद्यार्थियों को अपने लाभ के लिए उपयोग करना चाहते हैं।

ऐसे बनावटी एवं स्वार्थपूर्ण ‘देश-प्रेम’ से विद्यार्थियों को अलग हो जाना चाहिए क्योंकि ऐसे देशप्रेम से केवल नेताओं का ही लाभ होता है, बाकी सबकी हानि ही हानि

है। देश गड़ढे में जाता है तो जाए, नेताओं को इसकी क्या सबकी? वे तो संसद भवन में भी रटन्त तोते की तरह देशप्रेम का राग अलापते रहते हैं तथा मौका पड़ने पर एक दूसरे के ऊपर कीचड़ उछालने तथा मेज-कुर्सी एवं माइक का हत्था पटकने में भी कसर नहीं छोड़ते।

सच्चा देश प्रेमी व्यक्ति राजनीति की दलदल से कोसों दूर रहता है। वह सारे प्रपंचों से दूर रहकर मानव मात्र की सेवा करने में अपने जीवन को धन्य समझता है, निरन्तर देशवासियों की दुःख-तकलीफें दूर करने में लगा रहता है।

विद्यार्थियों के लिए सच्चे देश प्रेम का श्रेष्ठ उदाहरण यही होगा कि वे एकाग्रमन से तथा मेहनत से अपनी पढ़ाई करें तथा वकील, डॉक्टर, इंजीनियर, जज, अध्यापक, सैनिक आदि किसी भी प्रकार के पेशे को अपनाकर देशवासियों की तथा दीन-दुखियों की सेवा करें।

साहित्यिक एवं सांस्कृतिक निबन्ध :

1. भारतीय संस्कृति
2. समाज के प्रति साहित्यकार का दायित्व
3. साहित्य समाज का दर्पण है
4. मेरा प्रिय साहित्यकार

लोकोक्तियों पर आधारित निबन्ध :

1. परहित सरिस धर्म नहीं भाई
2. करत-करत अभ्यास के जड़मति होत सुजान
3. मजहब नहीं सिखाता आपस में बैर रखना
4. नर हो न निराश करो मन को

समस्या प्रधान निबन्ध :

1. बढ़ती जनसंख्या — एक विकट समस्या
2. महानगरों में बढ़ता प्रदूषण
3. एड्स — जानकारी ही बचाव
4. महानगरीय जीवन — अभिशाप एवं वरदान

विज्ञान सम्बन्धी निबन्ध :

1. मानव और विज्ञान
2. विज्ञान वरदान या अभिशाप
3. अन्तरिक्ष में बढ़ते कदम — भारत
4. धर्म और विज्ञान

नारी विषयक निबन्ध :

1. नारी तुम केवल श्रद्धा हो
2. महिलाओं का राजनीति में प्रवेश
3. नारी और नौकरी
4. महानगरों में असुरक्षित नारी

भारत सम्बन्धी निबन्ध :

1. सारे जहाँ से अच्छा हिन्दोस्ताँ हमारा
2. भारत की विशेषता – विविधता में एकता
3. साम्प्रदायिकता : भारत की एकता को खतरा
4. शिक्षा के गढ़ या आतंकवाद की पाठशाला
5. मजहब नहीं सिखाता आपस में बैर रखना
6. भारतीय गांव का बदलता स्वरूप

युवा पीढ़ी से सम्बन्धित निबन्ध :

1. विद्यार्थी और अनुशासन
2. छात्र-असंतोष – कारण और समाधान
3. युवा पीढ़ी और सिनेमा
4. राष्ट्र-निर्माण और युवा पीढ़ी का योगदान

विविध विषय :

1. विज्ञापन – लाभ और हानियाँ
2. भाग्य और पुरुषार्थ
3. हमारा बिखरता पारिवारिक जीवन
4. बदलते जीवन-मूल्य
5. शिक्षा और व्यवसाय
6. मनोरंजन के आधुनिक साधन
7. नैतिक शिक्षा का महत्व
8. आदर्श मित्र
9. प्रकृति और हम
10. "मुझे प्रकृति की ओर"
11. बाल-मजदूरी : एक अभिशाप
12. दूरदर्शन – विकास या विनाश
13. हमारा पर्व – हमारी संस्कृति

“अपठित—बोध” (गद्य)

विचारणीय तथ्य

अपठित का अर्थ है जो पहले से न पढ़ा गया हो। अपठित अवतरण गद्य अथवा पद्य दोनों में हो सकता है। परीक्षा में केवल अपठित गद्यांश देकर उस पर आधारित प्रश्न पूछे जाते हैं। इनका उत्तर देते समय निम्न बातों का ध्यान रखना चाहिए :

- दिया गया गद्यांश अपठित होता है अतः कम से कम दो बार अवश्य पढ़ना चाहिए ताकि मूल—भाव समझ में आ जाये।
- पूछे गए प्रश्नों के उत्तर रेखांकित कीजिए। ध्यान रहे प्रश्नों के उत्तर अनुच्छेद में दी गई सामग्री पर ही आधारित हो।
- प्रश्नों के उत्तर अत्यंत सरल भाषा और अपने शब्दों में दीजिए।
- प्रश्नों के उत्तर सीधे, संक्षिप्त एवं सटीक होने चाहिए।
- मुहावरों, अलंकार, सूक्तियों का प्रयोग नहीं करना चाहिए।
- कभी कठिन शब्दों के अर्थ, विलोम शब्द भी पूछे जाते हैं।
- उचित स्थानों पर विराम—चिह्नों का प्रयोग करना न भूलें।
- पूछे प्रश्नों में अनावश्यक विस्तार न करें।

अपठित—बोध में सार और शीर्षक भी लिखने को कहा जाता है। अतः अनुच्छेद को ध्यानपूर्वक पढ़ें।

उदाहरण (अभ्यास)

- प्र. निम्नलिखित गद्यांश को ध्यानपूर्वक पढ़कर दिये गये प्रश्नों के उत्तर लिखिए —

“मैं जिस समाज की कल्पना करता हूँ, उसमें गृहस्थ संन्यासी और संन्यासी गृहस्थ होंगे। अर्थात् सन्यास और गृहस्थ के बीच वह दूरी नहीं रहेगी जो परंपरा से चलती आ रही है। संन्यासी उत्तर कोटि का मनुष्य होता है। क्योंकि उसमें संचय की वृत्ति नहीं होती, लोभ और स्वार्थ नहीं होता। यही गुण गृहस्थ में भी होना चाहिए। संन्यासी भी वही श्रेष्ठ है जो समाज के लिये कुछ करे। ज्ञान और कर्म को भिन्न करोगे तो विषमता उत्पन्न होगी ही। ‘मुख में कविता और करघे पर हाथ, यह आदर्श मुझे बहुत पसन्द था। इसी की शिक्षा में दूसरों को भी देता हूँ। श्रेष्ठ समाज वही है जिसके सदस्य ज्ञान और कर्म में से एक को श्रेष्ठ और दूसरे को अद्यम नहीं मानते। श्रेष्ठ समाज वह है जिसके

सदस्य जी खोलकर श्रम करते हैं। जरूरत से अधिक धन पर अधिकार जमाने की उनकी इच्छा नहीं होती। वे मानते हैं :

“उदर समाता उन्न लैं, तनहिं समाता चीरं।
अधिकहि संग्रह ना करें, ताको नाम फकीर।”

प्रश्न :

- 1) ‘गृहस्थ और संन्यासी संन्यासी और गृहस्थ’ से लखक का क्या आशय है?
- 2) संन्यासी उत्तम कोटि का मनुष्य क्यों होता है?
- 3) समाज में विषमता कब उत्पन्न होती है?
- 4) ‘मुख में कविता और करघे पर हाथ’ के आधार पर अनुमान लगाओ कि इस गद्यांश में विचार किसके हैं?
- 5) श्रेष्ठ समाज कौन-सा है?
- 6) उपर्युक्त गद्यांश का ‘शीर्षक’ बताओ।

उत्तर :

- 1) गृहस्थ-संन्यासी और संन्यासी-गृहस्थ से आशय है गृहस्थ में रहकर संन्यासी जैसा सादा जीवन जीना दोनों में सन्तुलन बनाना ही संन्यासी-गृहस्थ जीवन है।
- 2) संन्यासी उत्तर कोटि का इसलिये होता है क्योंकि उसमें संचय (जोड़ने) की वृत्ति नहीं होती।
- 3) ज्ञान और कर्म को भिन्न करने से समाज में विषमता उत्पन्न होती है।
- 4) इस पंक्ति के आधार पर कहा जा सकता है कि इसमें संत कबीर के विचार व्यक्त हुए हैं।
- 5) श्रेष्ठ समाज वह है जिसके सदस्य ज्ञान और कर्म को बराबर का महत्व देते हैं। ऐसे समाज के लोग खूब मेहनत करते हैं तथा अधिक धन पर अधिकार नहीं जमाते।
- 6) उपर्युक्त गद्यांश का शीर्षक “सच्चा संन्यासी और गृहस्थ”।

विशेष :

- 1) उपर्युक्त अपठित गद्यांश पर आधारित प्रश्नों के उत्तर सरल भाषा में दिये गये हैं।

- 2) शब्द सीमा अंकों के अनुरूप है।
- 3) शीर्षक आकर्षक, संक्षिप्त एवं प्रभावशाली है।

अभ्यास कार्य

सभी धर्म हमें एक ही ईश्वर तक पहुँचाने के साधन हैं। अलग-अलग रास्तों पर चलकर भी हम एक ही ईश्वर तक पहुँचते हैं। इसमें किसी को दुखी नहीं होना चाहिए। हमें सभी धर्मों के प्रति समान भाव रखना चाहिए। दूसरे धर्मों के प्रति समभाव रखने से धर्म का क्षेत्र-व्यापक बनता है। हमारी धर्म के प्रति अंधता मिटती है। इससे हमारा प्रेम अधिक ज्ञानमय एवं पवित्र बनता है। यह बात लगभग असंभव है कि इस पृथ्वी पर कभी भी एक धर्म रहा होगा या हो सकेगा। यही कारण है कि लेखक विविध धर्मों में ऐसे तत्त्व को खोजने का प्रयास करता है जो विविध धर्मों के अनुयायियों के मध्य सहनशीलता की भावना को विकसित कर सकें।

सत्य के अनेक रूप होते हैं। यह सिद्धांत हमें दूसरे धर्मों को भली प्रकार समझने में मदद करता है। लेखक सात अंधों का उदाहरण देता है जिन्होंने हाथी का वर्णन अपने-अपने ढंग से किया। जिस अंधे का हाथी का जो अंग हाथ में आया, उसके अनुसार हाथी वैसा ही था। एक प्रकार से वे सभी अपनी-अपनी समझ से सही थे, पर इस दृष्टि से गलत थे कि उन्हें पूरे हाथी की समझ न थी। जब तक अलग-अलग धर्म मौजूद हैं, तब तक उनकी पृथक् पहचान के लिए बाहरी चिह्न की आवश्यकता होती है, लेकिन ये चिह्न जब आडंबर बन जाते हैं और अपने धर्म को दूसरे से अलग बताने का काम करने लगते हैं, तब त्यागने के योग्य हो जाते हैं। धर्म का उद्देश्य तो यह होना चाहिए कि वह अपने अनुयायियों को अच्छा इंसान बनाए। उसे ईश्वर से यह प्रार्थना करनी चाहिए – तू सभी को वह प्रकाश प्रदान कर, जिसकी उन्हें अपने सर्वोच्च विकास के लिए आवश्यकता है।

ईश्वर एक ऐसी रहस्यमयी शक्ति है जो सर्वत्र व्याप्त है। उस शक्ति का अनुभव तो किया जा सकता है, पर देखा नहीं जा सकता। इस शक्ति का कोई प्रमाण नहीं दिया जा सकता। वह शक्ति इंद्रियों की पहुँच के बाहर है। लेखक यह अनुभव करता है कि उसके चारों ओर हर चीज हमेशा बदलती रहती है और नष्ट होती रहती है। इन परिवर्तनों के पीछे कोई ऐसी शक्ति अवश्य है जो बदलती नहीं। वही शक्ति नया निर्माण एवं संहार करती रहती है। यह क्रम

निरंतर चलता रहता है। यह जीवन देने वाली शक्ति ही परमात्मा है। उसी का अस्तित्व अंतिम है। हमें यह तथ्य समझना चाहिए कि इंद्रियों द्वारा दिखाई देने वाली चीज स्थायी नहीं हो सकती। ईश्वर की शक्ति कल्याण करने वाली है। लेखक देखता है कि मृत्यु के बीच जीवन कायम रहता है, असत्य के बीच सत्य टिका रहता है और अंधकार के मध्य प्रकाश स्थिर रहता है। इससे पता चलता है कि ईश्वर जीवन है, सत्य है और प्रकाश है। वह परम कल्याणकारी है।

प्रश्न :

- 1) धर्मों के बारे में क्या कहा गया है? 2
 - 2) धर्मों के प्रति समभाव रखना क्यों अच्छा है? 2
 - 3) सत्य के अनेक रूप होने को किस उदाहरण द्वारा समझाया गया है? 2
 - 4) ईश्वर कैसी शक्ति है? 1
 - 5) हमें किस बात को समझना चाहिए। 1
 - 6) उपर्युक्त गद्यांश के लिए उपयुक्त शीर्षक दीजिए। 1
3. भारतीय धर्मनीति के प्रणेता नैतिक मूल्यों के प्रति अधिक जागरूक थे। उनकी यह धारणा थी कि नैतिक मूल्यों का दृढ़ता से पालन किए बिना किसी भी समाज की आर्थिक व सामाजिक प्रगति की नीतियाँ प्रभावी नहीं हो सकती। उन्होंने उच्चकोटि की जीवन-प्रणाली के निर्माण के लिए वेद की एक ऋचा के आधार पर कहा कि उत्कृष्ट जीवन-प्रणाली मनुष्य की विवेक-बुद्धि से तभी निर्मित होनी संभव है, जब 'सब लोगों के संकल्प, निश्चय, अभिप्राय समान हों, सबके हृदय में समानता की भव्य भावना जागृत हो और सब लोग पारस्परिक सहयोग से मनोनुकूल सभी कार्य करें। चरित्र/निर्माण की जो दिशा नीतिकारों ने निर्धारित की, वह आज भी अपने मूल रूप में मानव के लिए कल्याणकारी है। प्रायः यह देखा जाता है कि चरित्र और नैतिक मूल्यों की उपेक्षा वाणी, बाहु और उदर को संयत न रखने के कारण होती है। जो व्यक्ति इन तीनों पर नियंत्रण रखने में सफल हो जाता है, उसका चरित्र ऊँचा होता है। सभ्यता का विकास आदर्श चरित्र से ही सम्भव है। जिस समाज में चरित्रवान व्यक्तियों का बाहुल्य है, वह समाज सभ्य होता है और वही उन्नत कहा जाता है।

चरित्र मानव-समुदाय की अमूल्य निधि है। इसके अभाव में व्यक्ति पशुवत् व्यवहार करने लगता है। आहार, निद्रा, भय आदि की वृत्ति सभी जीवों में विद्यमान रहती है, यह आचार अर्थात् चरित्र की ही विशेषता है जो मनुष्य को

पशु से अलग कर, उससे ऊँचा उठा मनुष्यत्व प्रदान करती है। सामाजिक अनुशासन बनाए रखने के लिए भी चरित्र-निर्माण की आवश्यकता है। सामाजिक अनुशासन की भावना व्यक्ति में तभी जागृत होती है जब वह मानव-प्राणियों में ही नहीं, वरन् सभी जीवधारियों में अपनी आत्मा का दर्शन करता है।

- क) हमारे धर्मनीतिकार नैतिक मूल्यों के प्रति विशेष जागरूक क्यों थे? 2
- ख) विवेक बुद्धि क्या है? यह कब निर्मित होती है? 2
- ग) सामाजिक अनुशासन से क्या तात्पर्य है? यह भावना व्यक्ति में कब जागृत होती है? 2
- घ) 'उत्कृष्ट' और 'प्रगति' शब्दों के विलोम लिखिए। 1
- ङ) 'आर्थिक' और 'मनुष्यत्व' शब्दों में प्रत्यय बताइए। 1
- च) 'चरित्र' और 'निर्माण' शब्दों में विशेषण बताइए। 1
- छ) प्रस्तुत गद्यांश के लिए एक उपयुक्त शीर्षक दीजिए। 1

अपठित काव्यांश

क) उदाहरण अभ्यास

फिर से नहीं आता समय, जो एक बार चला गया,
जग में कहो बाधारहित कब कौन काम हुआ भला ।
बहती नदी सूखे अगर उस पार मैं इसके चलूँ
इस सोच में बैठा पुलिन पर, पार जा सकता भला?
किस रीति से काम, कब करना बनाकर योजना,
मन में लिए आशा प्रबल, दृढ़ जो वही बढ़ जाएगा ।
उसको मिलेगा तेज बल, अनुकूलता सब ओर से
कब कर्म योगी, वीर, अनुपम साहसी सुख पायेगा ।
यह वीर भोग्या, जो हृदय तल में बनी वसुधा सदा,
करती रही आह्वान है, युग वीर का पुरुषत्व का ।
कठिनाइयों में खोज का पथ, ज्योति पूरित जो करे,
विजयी वही होता धरणि — सुत वरण कर अमरत्व का ।

प्रश्न :

- 1) बहती नदी के उदाहरण से कवि ने क्या सिद्ध करना चाहा है?
- 2) जीवन में कैसे व्यक्ति प्रगति करते हैं?
- 3) वसुधरा किसका आह्वान करती है और क्यों?
- 4) दृढ़ निश्चयी वीर को क्या लाभ प्राप्त होते हैं?
- 5) धरणि—सुत किसे कहा है? वह कैसे विजय प्राप्त करता है?

उत्तर :

- 1) बहती नदी के उदाहरण से कवि ने यह सिद्ध करना चाहा है कि समय भी नदी की धारा की तरह बहता चला जाता है। बीता हुआ समय कभी लौटकर नहीं आता। समय के महत्व को समझना चाहिए।
- 2) जीवन में वे लोग प्रगति करते हैं जो योजना बनाकर कार्य करते हैं। जिन लोगों में आशा की तीव्र भावना होती है। वही लोग आगे बढ़ते हैं।
- 3) वसुधरा अर्थात् पृथ्वी कर्मयोगी और वीर पुरुषों का आह्वान करती है। ऐसे लोग ही सभी प्रकार के सुख पाते हैं। वीर व्यक्ति ही सुखों का उपभोग करते हैं।

- 4) दृढ़निश्चयी वीर आगे बढ़ता है। सफलता प्राप्त करता है तथा सभी प्रकार के सुखों का उपभोग करता है।
- 5) धरणि सुत अर्थात् धरती का पुत्र सामान्य वीर व्यक्ति को कहा गया है। ऐसा व्यक्ति कठिनाइयों के मध्य अपना रास्ता खोज निकालता है। उसकी दृढ़ता उसे विजय बनाती है।

अपठित पद्यांश

क) निम्नलिखित काव्यांश को पढ़कर पूछे गए प्रश्नों के उत्तर दीजिए –

यदि फूल नहीं बो सकते तो,
काँटे कम-से-कम मत बोना।
है अगम चेतना की घाटी,
कमजोर बड़ा मानव का मन।
ममता की शीतल छाया में,
होता कटुता का स्वयं शमन।
ज्वालाएँ जब घुल जाती हैं
खुल-खुल जाते हैं मुँदे नयन।
होकर निर्मलता में प्रशांत,
बहता प्राणों का क्षुब्ध पवन।
संकटमें यदि मुसका न सको,
भय से कातर हो मत रोना।
यदि फूल नहीं बन सकते तो,
काँटे कम से कम मत बोना।।

प्रश्न :

- 1) 'काँटे बोने' से कवि का क्या आशय है?
- 2) कटुता का शमन कैसे होता है?
- 3) मुँदे नयन कब खुल जाते हैं?
- 4) संकट आने पर मनुष्य को कैसा व्यवहार करना चाहिए?
- 5) 'खुल-खुल जाते हैं' में कौन-सा अलंकार है?

उत्तर :

- 1) किसी के जीवन में बाधाएँ, परेशानियाँ पैदा करना ।
- 2) ममता की शीतल छाया में आकर ।
- 3) जब ईर्ष्या—द्वेष और बुरे विचार समाप्त हो जाते हैं ।
- 4) भय से घबराना, रोना नहीं चाहिए बल्कि धैर्य से काम लेना चाहिए ।
- 5) पुनरुक्ति प्रकाश अलंकार ।

अपठित काव्यांश अभ्यास कार्य

ख) निम्नलिखित काव्यांश को ध्यानपूर्वक पढ़िए तथा उससे सम्बन्धित प्रश्नों के उत्तर दीजिए ।

1. देखकर बाधा विविध बहुविध घबराते नहीं ।
रह भरोसे भाग्य के दुःख भोग पछताते नहीं ।।
काम कितना ही कठिन हो किन्तु उकताते नहीं ।
भीड़ में चंचल बने जो वीर दिखलाते नहीं ।।
हो गए एक आन में उनके बुरे दिन भी भले ।
सब जगह सब काल में वे ही मिले फूले फले ।।

प्रश्न :

- 1) कैसा व्यक्ति असफल होकर दुःख भोगता है?
2) किन व्यक्तियों के बुरे दिन भी भले दिन बन जाते हैं?
3) संसार में कैसा व्यक्ति फलता फूलता है?
4) कर्मवीर व्यक्ति के क्या-क्या लक्षण बताएं हैं?
5) 'भीड़ में चंचल बने जो वीर दिखलाते नहीं' का आशय स्पष्ट कीजिए ।
2. इतनी ऊँची इसकी चोटी सकल धरती का ताज यही,
पर्वत पहाड़ से भरी धरा पर केवल पर्वत राज यही ।
अंबर में सिर, पाताल चरन,
मन इसका गंगा का बचपन
तन वरन वरन मुख निरावरण

इसकी छाया में जो भी है, वह मस्तक नहीं झुकाता है
गिरिराज हिमालय से भारत का कुछ ऐसा ही नाता है ।।

प्रश्न :

- 1) हिमालय का भारत से क्या सम्बन्ध है?
- 2) हिमालय को पर्वतराज क्यों कहते हैं?
- 3) हिमालय का तन और मन कैसा है?
- 4) किसके मन को गंगा का बचपन कहा गया है?
- 5) 'इसकी छाया में जो भी है वह मस्तक नहीं झुकाता है' का आशय स्पष्ट कीजिए ।

प्रतिदर्श प्रश्न पत्र-1

विषय : हिन्दी (ऐच्छिक)

कक्षा—XI

समय: 3 घण्टे

पूर्णांक : 80

1. निम्नलिखित गद्यांश को पढ़कर दिए गए प्रश्नों का उत्तर दीजिए।

हिन्दी रंगमंच में गतिविधियाँ बढ़ रही हैं। रंग महोत्सव के अवसर पर रंगमंच पर नाटकों का प्रदर्शन होता है हिन्दी रंगमंच से अनेक अनूदित नाट्य रचनाओं को प्रस्तुत किया जा रहा है। हिन्दी में मौलिक नाटकों का अभाव है। रंगमंच की मॉग पर हिन्दी लेखकों ने भी लिखना आरम्भ किया। अधिकांश लेखक, कहानीकार जब नाटक की रचना करते हैं तो कई बार विधागत भेद को भुला देते हैं। कहानी के पात्रों के सपाट संवादों को कह देने भर से वह कथावस्तु नाटक नहीं बन जाती। रंग नाटक वही होता है, जिसे मंच पर भली भाँति खेला जा सके। कविता या संगीत आदि के माध्यम से काव्य को समास शैली में प्रस्तुत करने पर भी कोई रचना नाटक नहीं हो जाती।

नाटक का अपना विधागत स्वरूप होता है। यह कहानी अथवा कविता के स्वरूप से भिन्न होता है। अभिनय प्रदर्शन, मंच सज्जा और नाटकीय कार्य व्यापार की प्रस्तुति से रंग नाटक बनता है। अतः रंग नाटक की रचना को रंग वस्तु की अपेक्षाओं के रूप में ही जाना पहचाना जा सकता है। कहानी का रूपांतरण हो या मौलिक रचना नाटक आपके रूप और रंग से देश में एक अलग साहित्यिक सत्ता रखता है।

प्रश्न-

- | | |
|---|---|
| (1) हिन्दी रंगमंच पर अनूदित नाटकों की प्रस्तुति का क्या कारण है? | 2 |
| (2) कहानी के पात्रों के सपाट संवादों से रंग नाटक क्यों नहीं बनता? | 2 |
| (3) रंग नाटक की वस्तु को कैसे पहचाना जा सकता है? | 2 |
| (4) रंग नाटक से क्या तात्पर्य है? | 2 |
| (5) वर्तमान में हिन्दी रंगमंच की क्या स्थिति है? | 1 |
| (6) 'साहित्यिक' शब्द में से प्रत्यय अलग कर एक नवीन शब्द बनाए। | 1 |
| (7) गद्यांश को उचित शीर्षक दीजिए। | 1 |

2. निम्नलिखित काव्यांश को ध्यानपूर्वक पढ़कर पूछे गए प्रश्नों का उत्तर दीजिए।

तिनका तिनका लाकर चिड़िया

रचती है आवास नया।

इसी तरह से रच जाता है

सर्जन का आकाश नया।

मानव और दानव में यूँ तो

भेद नजर नहीं आएगा
 एक पोंछता कहते आँसू
 जी भर एक रुलाएगा।
 रचने से ही आ पाता है
 जीवन में विश्वास नया
 कुछ तो इस धरती पर केवल
 खून बहाने आते हैं।
 आग बिछाते हैं राहों में
 फिर खुद ही जल जाते हैं।
 जो होते खुद को मिटाने वाले
 वे रचते इतिहास नया।
 मंत्र नाश का पढ़ा करें कुछ
 द्वार द्वार पर जा करके
 फूल खिलने वाले रहते
 घर घर फूल खिला करके।

- (क) सर्जन का नया आकाश कैसे बनता है? 1
 (ख) मानव और दानव में क्या अन्तर है? 1
 (ग) जीवन में नया विश्वास कैसे आता है? 1
 (घ) अत्याचारी का अन्त क्या होता है? 1
 (ङ) नाश का मंत्र पढ़ने और फूल खिलाने से क्या तात्पर्य है 1
 3. निम्नलिखित में से किसी एक पर निबंध लिखिए। 8
 (क) भारत में राष्ट्रीय एकता का स्वरूप
 (ख) भारत में बाल मजदूरी समस्या और समाधान
 (ग) विज्ञापन के लाभ और हानियाँ
 (घ) आतंकवाद समस्या और निराकरण
 4. दिल्ली परिवहन निगम के महाप्रबंधक को बसों में सुधार करने हेतु अनुरोध पत्र लिखिए। 5
 अथवा
 नगर निगम कार्यालय में सहायक पद हेतु स्ववृत्त सहित आवेदन पत्र लिखिए।
 5. निम्नलिखित में से किन्हीं चार प्रश्नों के उत्तर दीजिए - 4
 (1) भारत में पत्रकारिता की शुरुआत कब और किससे हुई?
 (2) इंटरनेट की कोई एक विशेषता लिखिए।

- (3) पत्रकारिता के मूल में कौन सा भाव होता है?
 (4) सबसे विख्यात डायरी कौन सी है?
 (5) पटकथा का स्रोत क्या है?

6. विद्यालय के शैक्षिक-विकास और उन्नति को ध्यान में रखते हुए प्रधानाचार्य ने एक समिति का गठन किया। जांच एवं अध्ययन के पश्चात् समिति की ओर से प्रतिवेदन प्रस्तुत कीजिए।
 अथवा

कार्यसूची और कार्यवृत्त को परिभाषित करते हुए दोनों में अन्तर स्पष्ट कीजिए?

7. निम्नलिखित काव्यांशों में से किसी एक की सप्रसंग व्याख्या करें। 6

भौरन को गुंजन बिहार बन कुंजन में
 मंजुल मलारन को गावनो लागत है।
 कहैं पद्माकर गुमानहूँ तैं मानहुँ तैं
 प्रानहूँ वै प्यारो मनभावनो लागत है।
 मोरन को सोर घनघोर चहुँ ओरन
 हिंडोरन को बृन्द छवि छावनो लागत है
 नेह सरसावन में मेघ बरसावन में
 सावन में झूलिबो सुहावनो लागत है।

अथवा

वज्र का उर एक छोटे अश्रु-कण में धो गलाया,
 दे किसी जीवन सुधा दो घूँट मदिरा माँग लाया?
 सो गई औंधी मलय की बात का उपधान ले क्या?
 विश्व का अभिशाप क्या चिर नींद बनकर पास आया?
 अमरता-सुत चाहता क्यों मृत्यु को उर में बसाना?

8. निम्नलिखित काव्यांशों का काव्य सौन्दर्य स्पष्ट कीजिए। 3x2=6

(क) झहरि-झहरि झीनी बूँद हैं परति मानो,
 घहरि-घहरि घटा घेरी है, गगन में।
 आनि कह्यौ स्याम मो सौं चलौ झूलिबे को आज'
 फूली न समानी भई ऐसी हौं मगन मैं॥
 चाहत उद्योई उठि गई सो निगोड़ी नींद,
 सोए गए भाग मेरे जानि वा जगन में।
 आँख खोलि देखीं तो न घन हैं, न घनश्याम,
 वेई छाई बूँदें मेरे आसुं हैं दृगन में॥

(ख) जागृति नहीं अनिद्रा मेरी,
नहीं गई भव निशा अंधेरी।
अंधकार केंद्रित धरती पर,
देती रही ज्योति चकफेरी!

9. किन्हीं दो प्रश्नों का उत्तर दीजिए। 2×2=4

(क) 'मुखली तऊ गुपालहिं भावति' पद के आधार पर 'गिरिधर नार नवावति' का आशय स्पष्ट कीजिए।

(ख) 'हस्तक्षेप' कविता सत्ता की क्रूरता और उसके कारण पैदा होने वाले प्रतिरोध की कविता है।' - स्पष्ट कीजिए

(ग) 'बादल को घिरते देखा है' कविता के आधार पर बताइए कि बादलों का वर्णन करते हुए कवि को कालिदास की याद क्यों आती है?

10. निम्नलिखित में से किसी एक गद्यांश की सप्रसंग व्याख्या कीजिए। 5

1888 में ज्योतिबा फुले को 'महात्मा' की उपाधि से सम्मानित किया गया तो उन्होंने कहा- "मुझे 'महात्मा' कहकर मेरे संघर्ष को पूर्ण विराम मत दीजिए। जब व्यक्ति मठाधीश बन जाता है तब वह संघर्ष नहीं कर सकता। इसलिए आप सब साधारण जन ही रहने दें, मुझे अपने बीच से अलग न करें।" महात्मा ज्योतिबा फुले की सबसे बड़ी विशेषता यह थी कि वे जो कहते थे, उसे अपने आचरण और व्यवहार में उतारकर दिखाते थे।

अथवा

चाँदनी में एक जादू होता है। लेकिन यह जादू अलग अलग लोगों के लिए अलग अलग है। न मालूम हमारी बात कहाँ से शुरू हुई। मैं डर-डर कर उससे बात करता जा रहा था। कहीं ऐसा न हो कि उसे जाने अनजाने मुझसे कोई चोट पहुँचे क्योंकि उसने अपने विचारों के लिए खून बहाया है, जिन्दगी खत्म की है।

11. किन्हीं दो प्रश्नों के उत्तर दीजिए। 3×2=6

(क) 'दोपहर का भोजन' शीर्षक किस प्रकार से सार्थक है।?

(ख) 'टार्च बेचने वाले' पाठ के आधार पर निम्न कथन को स्पष्ट करें-

“भव्य पुरुष ने कहा- “जहाँ अंधकार है वहीं प्रकाश है।”

(ग) 'खानाबदोश' कहानी में आज के समाज की किन-किन समस्याओं को रेखांकित किया गया है?

12. देव अथवा महादेवी वर्मा का साहित्यिक परिचय देते हुए उनकी काव्यगत विशेषताओं पर प्रकाश डालिए। 5

अथवा

रांगेय राघव अथवा भारतेन्दु हरिश्चन्द्र का साहित्यिक परिचय देते हुए उनकी भाषा-शैलीगत

विशेषताओं का उल्लेख कीजिए।

13. किन्हीं दो प्रश्नों का उत्तर दीजिए।

4x2=8

(क) राधा के चरित्र की ऐसी कौन सी विशेषताएँ हैं जिन्हें आप अपनाना चाहेंगे।

(ख) किस बात से पता चलता है कि मकबूल को अपने दादा से विशेष लगाव था?

(ग) पाठ 'दिशाहारा' के आधार पर शरत् तथा उसके पिता मोतीलाल के स्वभाव की समानताएं बताइए।

14. (क) 'हुसैन की कहानी अपनी जबानी' आत्मकथा के आधार पर मकबूल के पिता की चारित्रिक विशेषताएँ बताइए।

4

अथवा

'दिशाहारा' के आधार पर निम्न कथन को स्पष्ट कीजिए -

“उस समय वह सोच भी नहीं सकता था कि मनुष्य को दुःख पहुँचाने के अलावा भी साहित्य का कोई उद्देश्य हो सकता है।”

प्रश्न पत्र (हल सहित)

1. हिन्दी में मौलिक नाटकों का अभाव है। इसीलिए हिन्दी रंगमंच पर अनूदित नाटकों की प्रस्तुति की जाती है।
2. कहानी के पात्रों के सपाट संवादों को कह देने भर से वह कथावस्तु नाटक नहीं बन जाती क्योंकि नाटक में कथावस्तु को अभिनय के माध्यम से अभिव्यक्त किया जाता है।
3. रंग नाटक की वस्तु को अभिनय प्रदर्शन, मंच सज्जा और नाटकीय कार्य व्यापार के द्वारा पहचाना जा सकता है।
4. रंग नाटक वह होता है, जिसे मंच पर भली-भाँति खेला जा सके।
5. वर्तमान में हिंदी रंगमंच में गतिविधियाँ बढ़ रही हैं क्योंकि रंग महोत्सवों के अवसर पर रंगमंच पर नाटकों का प्रदर्शन होता है।
6. 'इक' प्रत्यय। नवीन शब्द-साप्ताहिक
6. रंगमंच की दुनिया / रंगमंचीय नाटक की विद्या या अन्य कोई उपयुक्त शीर्षक हो सकता है।
4. (क) जैसे तिनका लाकर चिड़िया अपना घर बनाती है वैसे ही कुछ निर्माण करना भी सर्जन ही करता है।
(ख) मानव सभी दुखी व्यक्तियों के आँसू पोछता है, अर्थात् दुख दूर करने की कोशिश करता है। दानव सभी का नुकसान और रूलाने की सोचता है।
(ग) जब वह कुछ नया सर्जन करता है, निर्माण करता है तब अपनी रचना को देखकर उसके अंदर विश्वास आता है।
(घ) अत्याचारी जब दूसरे के मार्ग में बाधा या रूकावट पैदा करते हैं तो वे स्वयं भी उस बाधा में नष्ट हो जाते हैं।
(ङ) नाश का मंत्र पढ़ने का अर्थ है – जो दुराचारी हो और हमेशा दूसरों का बुरा चाहता है। वह नाश का मंत्र पढ़ता रहता है।
फूल खिलाने से तात्पर्य उन व्यक्तियों से है जो हमेशा दूसरे के मार्ग की कठिनाइयों को दूर करने की सोचते हैं।
3. निबंध—
(क) प्रस्तावना
(ख) विषय-वस्तु

- (ग) भाषा की शुद्धता
(घ) प्रस्तुतिकरण
(ङ) उपसंहार

पत्र

4. सेवा में

महा प्रबंधक

दिल्ली परिवहन निगम

नई दिल्ली।

विषय: बसों में सुधार हेतु।

महोदय/महोदया

मैं आपका ध्यान दिल्ली परिवहन निगम की अपर्याप्त बस सेवा की ओर आकर्षित करना चाहता हूँ। दिल्ली परिवहन निगम की बसों में अभी तक आपेक्षित सुधार नहीं हो पाया है। अन्तर्राज्यीय बस अड्डे के लिए प्रायः बसे नहीं मिलती हैं। जो मिलती हैं उन बसों में सामान लेकर यात्रा करना अत्यन्त कठिन हो गया है। ऑटो रिक्शा वाले ऐसे में मनमाना किराया वसूलते हैं एवं यात्रियों के साथ अच्छे से पेश भी नहीं आते हैं। सामान्य लोगों के लिए तो ये बस ही एक मात्रा सहारा है। हमारे क्षेत्र में तो बसों की संतोषजनक स्थिति भी नहीं है।

आपसे प्रार्थना है कि इस क्षेत्र में कम से कम सौ अतिरिक्त बसों की अविलम्ब व्यवस्था की जाए।

आशा है कि आप हमारी प्रार्थना पर शीघ्र अति शीघ्र ध्यान देंगे। और समस्या का समाधान करने की कोशिश करेंगे।

सधन्यवाद

दिनांक

भवदीय.....

5. (1) भारत में पत्रकारिता की शुरुआत 1826 में बंगाल गजट से मानी जाती है।
- (2) इंटरनेट जनसंचार का सबसे आधुनिक और लोकप्रिय माध्यम है। इसमें रेडियो, टेलीविजन, किताब, सिनेमा यहाँ तक की पुस्तकालय के भी सारे गुण मौजूद हैं।
- (3) पत्रकारिता के मूल में जिज्ञासा का भाव होता है।
- (4) सबसे विख्यात डायरी ऐनी फ्रैंक की है। जो निजी डायरी होने के साथ-साथ ऐतिहासिक दस्तावेज़ के रूप में भी जानी जाती है।
- (5) पटकथा के मूल स्रोत में सबसे पहले कथा का चयन किया जाता है।
- (6) सम्पादन के दो सिद्धान्त—निष्पक्ष, तथ्यों की शुद्धता, वस्तुपरकता, संतुलन आदि हैं।
6. विभिन्न संस्थाओं एवं कार्यालयों के कार्य सम्पन्न करने के लिए कोई न कोई समिति होती है। यह समिति उस संस्था या कार्यालयों पर नज़र रखती है। आपसी विचार विमर्श एवं निर्णय के द्वारा समिति अपना कार्य करती है। ये निर्णय किसी न किसी निर्धारित बैठक में लिए जाते हैं।
अर्थात् बैठक आयोजित करने से पहले एक क्रमवार सूची बनाई जाती है। यह सूची संक्षिप्त होती है। जिसमें विचारणीय मुद्दों को लिखा जाता है। ये लिखे गए क्रमवार विचारणीय मुद्दे या विषय ही कार्यसूची कहलाते हैं। कार्यसूची में प्रस्तुत विचारणीय मुद्दों को समिति बैठक में सचिव द्वारा प्रस्तुत किया जाता है। समिति के अध्यक्ष की उपस्थिति में सभी सदस्य विचारणीय मुद्दों पर क्रमवार अपने-अपने विचार प्रकट करते हैं। उन मुद्दों का सर्वमान्य हल निकालते हैं और निर्णय लेते हैं। प्रत्येक मुद्दे पर किया गया विचार-विमर्श एवं निर्णय ही कार्यवृत्त कहलाता है। अतः कार्यसूची बैठक में प्रस्तुत किए जाने वाले मुद्दों की क्रमवार सूची है। और कार्यवृत्त प्रत्येक बिन्दु पर किया गया विचार विमर्श एवं लिया गया निर्णय है।
7. प्रसंग सहित व्याख्या
भौरन को गुंजन बिहार..... झूलिबो सुहावनो लागत है।
प्रसंग— कवि— शैतिकालीन कवि पद्माकर द्वारा रचित 'प्रकृति और शृंगार' से लिया गया है।
मूल भाव— इस कवित्त में सावन मास की मस्ती और उमंग का वर्णन किया गया है।

व्याख्या:— सावन मास का वर्णन करते हुए कवि कहते हैं कि सावन मास में प्रकृति में अनोखी उमंग और उल्लास भरी होती है। वन के कोने-कोने में लिखे हुए फूलों पर भौरें अपनी मधुर वाणी में गुंजार करते हैं। वे भौरें ऐसे लगते हैं जैसे कि प्रेमी और प्रेमिका कुंजों में बैठकर प्रेम भरा मधुर मल्हार राग गा रहे हो। भौरों का गुंजना कवि को प्रेमी-प्रेमिका का मल्हार प्रतीत होता है। कवि कहता है कि ऐसे प्रेम के मौसम में यदि प्रेमिका रूठती है, या मान करती है तो ऐसे में दोनों के बीच प्रेम और अधिक बढ़ जाता है। चारों ओर मोरों की आवाज और बादलों की गडगडाहट की आवाज सुनाई देती है। अर्थात् आकाश में छाए बादलों को देख मोर भी खुशी और प्रेम में नाचने लगते हैं। इस मास में वृक्षों की शाखाओं पर झूले डल गए हैं। और इस मास में वर्षा की बूंदों में अपनी प्रिया या अपने प्रिय के साथ झूलना बहुत ही सुन्दर, अच्छा लगता है और ये उनके प्रेम को और प्रगाढ़ करता है। ऐसे में प्रिय के प्रति अनुराग और मोह का भाव बढ़ जाता है।

विशेष—(1) भाषा — ब्रज भाषा

(2) पदावली — कोमलकांत

(3) छंद — कवित्त

(4) रस — संयोग शृंगार रस

(5) अनुप्रास अंलकार — बिहार वन, मंजुल मलारन, छवि छावनों वणों की आवृत्ति से संगीतात्मकता आ रही है।

8. **काव्य सौन्दर्य:—**

जाग्रति नहीं अनिद्रा मेरी रही ज्योति चकफेरी।

भाव पक्ष: भाव यह है कि कवि को नींद नहीं आ रही है। नींद न आना जागृति की ओर इशारा नहीं करता बल्कि यहाँ कवि समाज में व्याप्त विसंगतियों से परेशान है और यही परेशानी उसकी नींद न आने का कारण है। नींद न आना निराशा और अंधकार को बताता है। जब तक धरती पर अन्याय, निराशा, अंधकार रहेगा तब तक ज्योति अर्थात् सब कुछ सही होने की आशा का प्रकाश अंधकार को दूर करने के लिए चारों ओर घूमती रहेगा। वह अंधेरा दूर करना चाहता है, पर दूर हो नहीं रहा है, जिससे ज्योति को चकफेरी देनी पड़ेगी।

शिल्प पक्षः

- | | | | |
|-----|---------|---|--------------------------|
| (1) | भव—निशा | — | रूपक अंलकार |
| (2) | भाषा | — | भावानुकूल, संस्कृत निष्ठ |
| (3) | बोली | — | खड़ी बोली |
| (4) | प्रतीक | — | नए प्रतीकों का प्रयोग |
| (5) | छंद | — | छंद मुक्त रचना। |

9. (क) गोपियाँ मुरली के प्रति सौतिया डाह का भाव रखती हैं। श्री कृष्ण को मुरली के प्रेम में वशीभूत देखकर सखी कहती हैं कि मुरली का श्री कृष्ण के प्रति व्यवहार अच्छा नहीं है। वह उन्हें एक पाँव पर खड़ा रखती है। उन पर अपना अत्याधिक अधिकार जताती है। वह उनसे अनेक प्रकार की आज्ञाओं का पालन करवाती है। बाँसुरी बजाते समय उनकी कमर टेढ़ी हो जाती है। वह उनकी गर्दन भी झुकवाती है। वह उनके होठों की शय्या पर वास करके अपने पाव दबवाती है। इतना ही नहीं मुरली बजाते समय श्री कृष्ण की भौहें टेढ़ी हो जाती है। नथुने फूल जाते हैं। इस प्रकार वह हम पर गुस्सा करवाती है। मुरली ने उनको अपने वश में किया हुआ है। यहाँ पर नारी मनोविज्ञान का चित्रण किया हुआ है।

(ख) 'हस्तक्षेप' कविता में बताया गया है कि जब—जब सत्ता की निरंकुशता, क्रूरता बढ़ती है। तब—तब उसके कारण पैदा होने वाला प्रतिरोध भी बढ़ता जाता है। कवि बताता है कि जनतांत्रिक व्यवस्था में यदि समय—समय पर हस्तक्षेप न किया जाए तो वह व्यवस्था जनतांत्रिक न रहकर निरंकुश हो जाती है। इस कविता में ऐसी व्यवस्था की ओर इशारा किया गया है जहाँ कोई हस्तक्षेप करने की हिम्मत नहीं जुटाता है। वह बताना चाहता है कि हस्तक्षेप मुर्दा भी कर सकता है तो फिर जिन्दा व्यक्ति चुप कैसे रह सकता है। यदि जनतंत्र बचाना है तो हस्तक्षेप करना ही पड़ेगा।

10. निम्नलिखित में से किसी एक गद्यांश की सप्रसंग व्याख्या कीजिए।

1888 में ज्योतिबा फुले व्यवहार में उतारकर दिखाते थे।

प्रसंग— प्रस्तुत गद्यांश 'सुधा अरोडा' द्वारा रचित 'ज्योतिषा फुले' की जीवनी से लिया गया है।

संदर्भ:— लेखिका ने यहाँ 'ज्योतिषा फुले' के उस वक्तव्य का उल्लेख किया है जो उन्होंने उस समय दिया था जब उन्हें महात्मा कहकर पुकारा था।

व्याख्या:—1888 में ज्योतिबा फुले को महात्मा की उपाधि से सम्मानित किया गया। फुले जी ने कहा कि महात्मा की उपाधि मेरे संघर्ष में बाधक बनेगी। उनका तर्क था कि मठाधीश बनने के बाद व्यक्ति आराम पसंद हो जाता है। ऐशो—आराम का जीवन व्यतीत करने वाला व्यक्ति कभी संघर्ष नहीं कर सकता। उनका कहना था कि आप मुझे जैसा हूँ वैसा ही रहने दीजिए मुझे महात्मा या मठाधीश मत बनाओ। मैं अभी अपने जीवन को पूर्ण विराम नहीं देना चाहता मैं अभी समाज की कुरितियों के विरुद्ध संघर्ष करना चाहता हूँ।

विशेष: (1) खड़ी बोली का प्रयोग

(2) भाषा सरल सहज रोचक

(3) ज्योतिबा फुले की कथनी और करनी में समानता बताकर उनके महान व्यक्तित्व पर प्रकाश डाला गया है।

(4) सादा सरल जीवन जीने की प्रेरणा मिलती है।

(5) 'मठाधीश' शब्द से समाज की वर्ग विषमता का पता चलता है।

11. (क) अमरकांत की कहानी 'दोपहर का भोजन' शीर्षक की दृष्टि से सफल रचना है। इस कहानी का सम्पूर्ण कथानक दोपहर के भोजन पर सिमटा है। सिद्धेश्वरी ने दोपहर का भोजन तैयार कर लिया है। सबसे पहले उसका बड़ा बेटा रामचंद्र भोजन के लिए आता है, उसके बात छोटा बेटा मोहन व फिर मुंशी जी भोजन के लिए आते हैं। इस कहानी के पूरे संवाद दोपहर के भोजन पर केन्द्रीत हैं। पात्रों की सभी वार्ताएँ दोपहर का भोजन करते हुए ही होती हैं। अतः इस कहानी का शीर्षक 'दोपहर का भोजन' पूरी तरह से सार्थक और सटीक है।

(ख) जहाँ अंधकार होता है वहीं प्रकाश भी होता है। प्रकाश है तो अंधकार भी अवश्य ही होगा। जिस प्रकार दुख है तो सुख भी है इसी प्रकार अंधकार है तो प्रकाश भी है। अंधकार का स्थान प्रकाश ग्रहण करता है और प्रकाश का स्थान अंधकार ग्रहण करता है। यही इस कथन का अर्थ भी है। अंधकार में कोई ना कोई प्रकाश की किरण अवश्य होती है। अतः उस किरण को तलाश कर अपने लिए जीवन में मार्ग बनाना चाहिए।